राग-मालिका

मैडिको श्याम की तेलुगु कहानियाँ

अनुवादिका

चागंटि तुलसी

राग-मालिका

- मैडिको श्याम की तेलुगु कहानियाँ

अनुवादिका

डॉ. चागंटि तुलसी

चासो स्फूर्ति प्रकाशन

पॉल नगर, विजयनगरम- 535003

RAGAMALIKA

Telugu Stories of Medico Shyam

Translated by Dr. Chaganti Tulasi

Price : Rs. 120/- Only

Us. $ 5 Only

पुस्तक का नाम	:	राग मालिका
कहानीकार	:	मैडिको श्याम
अनुवादिका	:	डॉ चागंटि तुलसी
प्रकाशक	:	चासो स्फूर्ति प्रकाशन पॉल नगर, तीसरी गली विजयनगरम-535003 आन्ध्रप्रदेश मो.099633-77672, फोनः 08922-274787
संस्करण	:	प्रथम 2016
प्रतियाँ	:	500
मूल्य	:	रु.120/- मात्र यू.एस. $ 5 मात्र
सर्वाधिकार	:	अनुवादिका
मुद्रक	:	, विशाखपट्टणम
शब्द सज्जा	:	के.एल. प्रसन्न गौरी, विशाखपट्टणम

अनुक्रम

चिंतनशील चित्तवृत्ति की टेक **-चागंटि तुलसी**

1. रेखाएँ	...	1
2. कमललोचनियों के प्रति	...	13
3. राग शहनाई का	...	24
4. राग-मालिका	...	30
5. लौंग	...	38
6. कहानी हमारी	...	50
7. क्रेन	...	61
8. कवि महोदय की पत्नी	...	63
9. हल्की बारिश उजाली की	...	70
10. लीव इट (Leave it)	...	79
11. आई.सी.सी.यू.	...	84
12. कहानी एक हकले की	...	95

मुनासिब होते लोग **- महाबीर सरवर**

चिंतनशील चित्तवृत्ति की टेक

उत्तर-आन्ध्र प्रदेश गुरजाड अप्पाराव, चासो (चागंटि सोमयाजुलु) रावि शास्त्री (राचकोण्डा विश्वनाथ शास्त्री) जैसे महान प्रतिभा संपन्न कथाकारों का सृजन- क्षेत्र है। उस क्षेत्र में जनमे मैडिको श्याम अपने समवयस्क प्रगतिशील एवं वास्तविकतावादी कहानीकारों से भिन्न स्वर और शैली को लेकर साहित्य के क्षेत्र में आये हैं।

मानव जीवन साहित्य सृजन-वृत्त के केन्द्र बिन्दु है। अनुभव उसकी परिधि है। व्यष्टि एवं समष्टि अनुभव-परिधि की दो बिन्दु हैं। व्यष्टि व्यष्टिसमूह से टकराता है। व्यष्टिसमूह व्यष्टि से टकराता है। इस टक्कर में से जीवन की यात्रा चलती रहती है।

मैडिको श्याम चिंतनशील चित्तवृत्ति के कथाकार है। उनकी हर कहानी में वह प्रायः हावी होती है। पूरी कहानी में वही दर्शन देती है। व्यष्टि समष्टि के टक्कर से कथाकार की चिंतनशील चित्तवृत्ति से कई टेक (Refrain) लगातार एक के बाद एक सामने आती रहती है। यही उनकी शैली है। यद्यपि शैली में बहाव है फिर भी बीच-बीच की चिंतन की टेक इस शैली से अपरिचित पाठकों को त्रुटि अथवा शिथिल लग सकती है। बहाव के अलावा उनकी शैली की दूसरी विशिष्टता है- तेलुगु, अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषाओं के शब्दों का मिला-जुला प्रयोग। मणि-प्रवाल शैली (दो भाषाओं के शब्दों का मिला-जुला प्रयोग) प्रसिद्ध है। मैडिको श्याम ने तीन भाषाओं के शब्दों का मिला-जुला प्रयोग किया है। तेलुगु, अंग्रेजी एवं हिन्दी के कवियों, गीतकारों, चिंतकों और लेखकों की रचनाओं के उद्धरणों के साथ-साथ तेलुगु एवं हिन्दी फ़िल्मी गीतों का बारंबार प्यार-भरा जिक्र किया है। मानव जीवन एवं प्रकृति के प्रति प्रगाढ़ प्रेम, सौंदर्य के प्रति अनुरक्ति जो एक सृजनशील कलाकार के लिए सर्वथा अपेक्षित गुण हैं, वे उनमें भरपूर हैं।

चूंकि वे मैडिको हैं इसलिए लोगों के शारीरिक रोगों का निदान करने में पटु है। उस पेशे ने उन्हें एक सुअवसर दिया है कि अनेक चित्तवृत्तियों के लोगों के स्वभावगत खूबियों एवं खामियों को परख सके तथा अपनी चिंतनशील चित्तवृत्ति से उन-उन खामियों का निदान कहानियों के माध्यम से कर सके।

यह सच है, जैसे उन्होंने अपनी लीव इट (Leave It) कहानी की

पादटिप्पणी में बताया है कि वस्तु के घृणास्पद होने पर फेंक सकते हैं पर जीवन के घृणास्पद होने पर न फेंक सकते हैं न छोड़ भी सकते। लेकिन उस घृणास्पद रूप के बदलाव को चाहना और उसके लिए चेष्टा करना अनिवार्य होता है। इसीलिए वे भी चिंतन एवं व्यंग्य का सहारा लेकर समाजगत 'हकलेपन' तथा अन्यान्य खामियों को उंगली उठाकर दर्शाते हैं।

मैडिको श्याम की कहानियों का अनुवाद करने में मेरा लक्ष्य यही रहा कि उनकी प्रवाहशील मणिप्रवाल शैली (अनुवाद में तेलुगु को छोड़ने पर) तथा उनके चित्तवृत्ति से उत्पन्न दर्शन को उन्हीं की शैली में हिन्दी-पाठकों तक पहुंचा कर उनकी प्रतिक्रिया देख लूँ। हिन्दी के जरिए देश के अन्यान्य भाषाभाषी तेलुगु प्रांत के इस विशिष्ट कहानीकार से परिचित हों।

आकांक्षा है, हिन्दी-पाठक तथा अन्यान्य भाषाभाषी इन कहानियों का हृदय से स्वागत करेंगे।

आशा है, मेरी आकांक्षा पर पानी नहीं फेरेंगे।

17-1-2016 **-चागंटि तुलसी**

विजयनगरम

रेखाएँ

दुपहर का वक्त। रेडियो के मनोरंजन-गीत सुनते हुए कागज पर खींचता जा रहा हूँ रेखाएँ। रेखाओं के प्रति मेरा बेशुमार प्यार है। वजह? हँसी आयी। बापू (आन्ध्र के प्रख्यात चित्रकार और फ़िल्म डाइरेक्टर) की तस्वीरें जो बहुत ही अच्छी है, रेखाएँ हैं न। रेखाओं में से खूबसूरती को उतारने में बापू माहिर है। कहना चाहिए, विरले हैं। बापू की खींची तस्वीर को जब देखता हूँ तो मुझे रेखा की याद आती है। रेखा को जब देखता हूँ तो बापू की तस्वीर सामने आती है। मैं तो बापू नहीं हूँ। इसलिए सिर्फ़ रेखाओं को खींच रहा हूँ।

रेडियो में से रफ़ी की आवाज- 'तेरी प्यारी-प्यारी सूरत को'-वह गीत जिस में बताया गया है कि 'प्यारी, दर्पण में मत देखा कर। नजर लग जायेगी।'

रेखा को बताना चाहिए।

हिन्दी के गानों में न जाने कितनी किस्म की रेखाएँ हैं। रोमान्स के तरह-तरह के शेड़ (सूक्ष्म भेद) हैं। पर सेक्स में? बस एक ही!

रफ़ी ने दूसरा गाना शुरू किया।

'आँखों में काजल मत लगा। पावों में पायल मत पहन। बालों में फूल मत लगा।'

काजल लगायेगी तो हर कोई राह भटक जायेगा। पाँवों की पायल की झन्कार से दिल की धड़कन बढ़ेगी। बालों के फूलों से दर्पण खुशबू से भर जायेगा।

फ़िल्म के दृश्य को न देखते हुए जब रफ़ी के गाने सुनता हूँ तो लगता है, रफ़ी साहब ने वे गाने सारे के सारे मेरे लिए, मेरी रेखा के लिए ही गाये हों। लताजी, आशाजी और सुमन जी के सारे के सारे गाने रेखा ने ही मेरे लिए गाये हों।

रेखा हिन्दी नहीं जानती। सुनने के लिए कहूँ भी तो कैसे कहूँ?

या तो बायें हाथ को फैलाकर विशाखपट्टणम की मीड़ियम वेव लगा लेती या दाहिने हाथ से सिलोन को। सिलोन से तेलुगु फ़िल्मी गीत संगीत माधुरी-सब

अच्छे लगते हैं। पर ठीक उसी वक्त 'विविध भारती' से हिन्दी के गाने सुनने को मिलते हैं।

बड़ी मुश्किल से कभी कभार उसे हिन्दी गाने सुनाने पर वह शर्त लगा बैठती कि वह धुन तेलुगु के चलपतिराव अथवा घंटसाला वेंकटेश्वर राव से चुरायी गयी है। डंके की चोट पर कहती कि वह तेलुगु म्यूजिक है।

दूसरा कोई इस तरह का दावा करे तो क्या मैं चुप रहता?

'हुजूर! इल्लरिकम' (तेलुगु फ़िल्म) 62 की है। यह तो पंजाबी फ़ोक से ली गयी है। ओ.पी. नय्यर साब ने 1958 में किया। घंटसाला (तेलुगु के प्रख्यात प्लेबाक सिंगर) का वह गाना 'ओहो बस्ती दोरसानी' भी ओ.पी. नय्यर के 'लेके पहला पहला प्यार' की धुन पर किया गया। समझ गये न? हूजूर! आपको हिस्टारिकल आउट लुक की जरूरत है।' कहनेवाले को अपनी जबरदस्त दलीलें पेश कर फिर बोलने नहीं देता!

पर रेखा के आगे? वह जो बहुत कम बात करती है, उसके ओंठ, दांत तथा लकीर जैसी उसकी भौंहें देखते हुए कुछ बोल नहीं सकता! बोल नहीं पाता। सच-सच बताऊँ, मुझे रेखा का मना करना अच्छा लगता है। उसका स्वीकार करना भी अच्छा लगता है। वह तो कुछ नहीं बोलती। जो भी कहता हूँ उसे सुन लेती है।

सुनने में आया कि जब दुनिया के दो बुद्धिजीवियों की भेंट हुई तो वे पन्द्रह मिनट तक एक दूसरे से कुछ नहीं बोले। मौन ही रहे। मैं चाहता हूँ मेरी भेंट रेखा से उसी तरह की हो। पर उससे मिलते ही अनाप-शनाप ऊलजलूल बातें बकने लगता हूँ। हाँ, डर है कि मौन रहने से जाने वह क्या सोच बैठे। फिर यह डर भी है कि बोलने पर न जाने क्या समझ बैठे।

'हलो' नजर में मुस्कुराहट!

'जा कहाँ रही?'

उन आँखों को देखता हूँ तो मुझे जवाब सुनायी नहीं देता।

'कौन-सी पुस्तक है?' मेरे हाथ की पुस्तक की ओर देखते हुए पूछती।

समझ नहीं पाता कि क्या कहे? कैसे कहें। हड़बड़ी में पुस्तक के बारे में बोलने लगता। बोलता जा रहा । पर क्या बोला जा रहा खुद को भी नहीं मालूम। हाँ, मेरा दिमाग वेल ट्रेनड (Well Trained)-पुस्तक के पन्नों के पन्ने ओठों पर

उतारने में समर्थ!! जैसे रिफ्लेक्स एक्शन (Refleæ Action)!!

कोई दरवाजा खटखटा रहा है।

'दिल अपना प्रीति परायी किस ने है यह रीत बनायी।' सुनते हुए दरवाजा खोला।

'रे रवि ! गाने सुनने के माने यह नहीं कि खुद को बिसारना!' सामने की दीवार पर टंगी हुई लीना चन्दावर्कर की तस्वीर देखते हुए राजू ने कहा!

मुझे डर लगा कि कहीं वह उस तस्वीर को चूम न ले! एक बार ऐसा ही हुआ था। तब दीवार की ऊँचाई पर जयसुधा की कैलिनडर थी। कुर्सी पर खड़े होकर उस ने...

'राजू! इधर देख!' रमेश ने उसकी अटैन्शन डाइवर्ट (attention di-vert) करते हुए चिल्लाया।

'क्या रे?'

'देख! '

प्लांक के सफेद कागज पर रेखाएँ!! पूरे शीट (Sheet) पर भरी हुई है रेखाएँ। शून्य! समान्तर रेखाएँ! वर्गाकार! त्रिभुज। अबटयूस ऐन्गल, अक्यूट ऐनगल, तरह-तरह की रेखाएँ!!

'रवि! यह सब क्या है रे!' दोनों ने कोरस में पूछा।

क्या बताता! चिढ़ गया।

'कुछ नहीं।'

मैं तस्वीर खींचने की कला जाननेवाला चित्रकार तो नहीं!, मेरी रेखा को कागज पर उतारूँ कैसे??

रमेश पन्नों-पन्नों पर 'सजनी सजनी! हजार बार लिखता रहता। राजू पन्नों-पन्नों पर 'रजनी-रजनी' लाखों बार लिखता रहता। उन दोनों का उस तरह लिखना गलत नहीं है तो मेरे रेखाएँ खींचना गलत होगा कैसे? रेखाओं का मैकानिजम् (Mechanism) यही है न! पर यह बात उन्हें बता नहीं सकता। एक बार जब मैं कागज पर 'रेखा! रेखा! रेखा!' लिख रहा था कि इतने में रमानाथ कमरे के अंदर आ गया। मैं ने उस कागज को बिस्तर के नीचे छुपाया' मुझे क्या मालूम, वह किसलिए आया था!

'भई कोई उपन्यास हो तो दे रे!' हँसते हुए उसने बिस्तर को उठा दिया।

मेरी जान निकलने को थी।

मैं कह तो जा रहा था कि 'रे! रे!' इतने में 'यह क्या रे!' कह कर उसने कागज को निकाला।

'दे! दे दे रे!' मैं ने उस के हाथ से कागज छीन लिया।

वह ज़िद करने लगा कि वह उस कागज को बगैर देखे हटेगा नहीं। मैनेरलेस रोग (Mannerless Rogue)!! मैं मना करता रहा, और वह मानने को नाराज!

खुद की, अपने ही दिल की धड़कन डराने लगी। घबराकर कागज को चिंदी चिंदी करके फेंक दिया झरोखे से।

मेरे तरफ़ अजीब नज़रों से देखकर वह दूसरे लड़के के कमरे में चला गया।

तब से मैं कागज पर रेखा का नाम न लिखकर रेखाएँ खींच रहा हूँ!! कोड़ लैंग्वेग में (Code Language)!!

'उठ रे! जल्दी कर! निकल!' कहा रमेश ने कागज को देखते हुए ।

'क्विक! कपड़े पहन! तार औ टेलिग्राम!!' बोला राजू। ऐसी ही जुबान में बोलता है वह!

तार और टेलिग्राम का मतलब होता है या तो रजनी या सजनी। अथवा रजनी और सजनी दोनों! वे दोनों फ़िल्म देखने अथवा टहलने निकली होंगी!! यह है ताजा खबर! इस वक्त क्या फ़िल्म होगी? मैं ने घड़ी देखी। तीन बजने में दस मिनट बाकी है। रेडियो में से किशोर कुमार गा रहा है 'आंचल में क्या जी!' राजू ने निर्दयी होकर रेडियो का गला घोंट लिया।

मैं जल्दी-जल्दी कपड़े पहन रहा। इस बीच रमेश अपना एनालिसिस (Analysis) सुनाने लगा- 'मेरे दिल के दर्द की ओर इशारा करते हैं एक्यूट ऐनगल! शून्य तो नाजूक कुँआरियों के... लहरें तो सच में साकार न होने वाले सपने...'

कंघी कर रहा। वे दोनों मुझे 'जल्दी-जल्दी' कहते हुए हड़बड़ाने लगे।

हम तीनों निकल पड़े। विशाखपट्टणम में कॉलेज की ओर से उतराई तो

चलने के लिए आसान है। जल्दी- जल्दी उतरते चलते गये 'तीन बजकर दस मिनट हुए 'जगदम्बा' थियेटर पहुँचने के लिए बस, जाने में बीस ही मिनट लगे। टिकट ली! थियेटर के पास तितलियाँ एक आध ही थीं। छाती फुलाकर, कॉलर उठाकर चारों तरफ़ नजर दौड़ाते रहे।

'कौन नहीं जानता नौजवानों की...

छाती फुलाके कॉलर उठाके चलते

मगर...

पाँव में सिर देने तैयार रहते!'

सच्ची, यह कहना सोलह आने सच ही निकला। लगा, कोई फब्ती कस रहा हो।

राजू और रमेश दोनों गंभीर थे। चारों तरफ़ देखते रहे। तीखी निगाहों से! चिढ़ -चिढ़कर! इंतजार! बेचैनी! इंतजार औ बेचैनी!

'कि तेरा इंतजार है!' गाने की बेचैनी!

'चल, स्वप्ना रेस्ताराँ चले, काफी पी ले!' मैं ने कहा।

'चुप' चुप रह!' दोनों ने कहा तो नहीं, पर उनकी नजर का भाव यही था।

वाह! वाह! क्या गजब की हमनवाई!!

किसी ने कहा कि दुनिया के हर एक काम के पीछे, नहीं, नहीं, हर महान पुरुष के पीछे एक स्त्री का हाथ रहता है। इन दोनों के पीछे दो युवतियों के चार हाथ तो नहीं हैं, पर उन हाथों के लिए इन का इन्तजार, अरमान और हसरत है। दोनों के दोनों सच्ची दिल से मजरूह सुलतान पुरी है। हसरत जयपुरी है!!

'चल!' कहा राजू ने।

'रे! देख! उस तरफ़! 'स्वप्ना' रेस्ताराँ की सीढ़ियों के तरफ! हमारी सपनों की देवियाँ!' बोला वह।

देखा मैंने उस तरफ़! दिल की धड़कन रुक गयी। आगे-आगे रेखा, उसके पीछे सजनी और रजनी!! तीनों इस तरफ़ आ रहीं, हाँ, सीढ़ियाँ उतर रहीं।

'जब तुम आती हो मेरी ओर

दिल की धड़कन बढ़ जाती है!'

'इनके साथ यह बेगानी क्यों आ गयी!' रेखा को देखकर रमेश चिढ़ गया।

' इन दिनों जहाँ देखो, यह टपक पड़ती है। कबाब में हड्डी की तरह! ख्वाहमख्वाह डिस्टर्ब करती मुझे! देख उसकी बगुले की चाल!!'

डॉम डर्टी गूस! (Damn dirty goose) यह क्या जानता है, खूबसूरती क्या होती है। खूबसूरती देखने वाले की नजर में होती है। बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद!!

रेखा ने आँखों- आँखों में बड़ी खूबसूरती से 'हलो' बोल दी। मैंने भी उसी तरह... 'हलो' कह दिया।

रमेश को देखकर सजनी ने मुँह बनाया।

न जाने इस रजनी में ऐसा क्या है, मर मिटने के लिए!!

पूछो, अरब सागर की गहराई हिमालय की ऊँचाई अथवा दक्कन के पठार का क्षेत्रफल-इनके बारे में जानना, इनका जवाब देना बायें हाथ का खेल ही है। पर इस रजनी का चेहरा नेगेटिव (Negative) है। इसका यह मतलब नहीं है कि वह काली है। बेचारी गोरी तो है। लेकिन सुनने में आया कि हर एक बात में उल्टे ढ़ंग से वह रिअकेट (react) होती है। अस्पताल के कोई वॉर्डमेट (Wardmate), बेचारा पूछ बैठा-'कब वापस आयी घर से?'

'तुझे क्या मतलब?' कह कर वह झट से वहाँ से चली गयी।

'ऐसी लड़की से तेरा यह लगाव क्या रे! - इसे छोड़ दे' कह-कह कर हम थक गये। राजू सुनता तो नहीं।

थियेटरवालों को हाथ जोड़कर, गिड़गिड़ाकर, उन तीनों की कुर्सियों के पीछे वाली कुर्सियाँ पाने में रमेश सफल हुआ। वह बड़ा कार्य-साधक है!!

दोनों ने न खुद फ़िल्म देखी न देखने दी। राजू तो होशियार है। दिल से लाइटवेनवाला। पर रमेश तो वैसा नहीं । अनाप-शनाप न जाने कहाँ-कहाँ की बटोरी गयी बातें हद से बढ़कर बोलता रहा। वह खुद नहीं जानता कि वह क्या बकता जा रहा।

तीन बार मुड़कर सजनी ने उसकी ओर देखा। उसकी नजर तिरस्कार की थी। मैं मौन रहा, इस डर से कि रेखा सुनकर कुछ की कुछ समझ न ले।

हमारे बीच यानी मेरे और रेखा के बीच कम्नुनिकेशन गेप (Communication gap) है ही नहीं। पीछे से कुछ न कुछ कहने की हालत मेरी तो नहीं। रेखा से, मैं जो भी चाहूँ, बात कर सकता हूँ। हाँ, तीन शब्द सिर्फ़ तीन शब्दों को छोड़ कर!!

विराम के वक्त रमेश को रोक नहीं सके! उनके पास जाकर वह पूछ बैठा- 'हलो मिस! हौ एबौट हैविंग ए सिप ऑफ ए गोल्डस्पॉट? (How about having a sip of a goldspot?)

सजनी ने मुँह फेर लिया। जवाब में कहा-'नो थैंक्स' ('No, Thanks') उसके चेहरे को देखकर डर लगा कि वह हम पर बरस पड़ेगी!

रेखा चुप रही। रजनी ने कहा-'चलिए!' बताया न, इसके बारे में कुछ ऐसस (assess) कर नहीं सकते।

रमेश शायद मन ही मन रोते हुए कूलड्रिंक्स (Cool Drinks) के तरफ़ चल पड़ा।

रजनी के वास्ते राजू बिल चुकाने के लिए आगे बढ़ा। रमेश ने उसे रोक कर खुद बिल चुकाया कि उसकी शान में आंच न आवे।

मुझे हँसी आयी।

'मजे' के कूल ड्रिंक (Cool Drink) का सिप (Sip) लेते हुए रेखा की ओर देखना! रेखा को देखते हुए 'मजे' की घूंट पीना! यह घूंट सिगरेट, उपकार- ब्रांडवाली सुपारी के कांबिनेशन (Combination) से भी ज्यादा उम्दा लगा।

सजनी ने कुछ नहीं लिया।

'धन्यवाद' कहकर उन तीनों के जाने के बाद राजू बोला- 'रमेश! तेरी तो बड़ी वह निकली! शिष्टाचार के लिए ही सही ड्रिंक लेती तो क्या होता!'

'चुप बे! नहीं तो तुझे इतना पीटूँगा कि मुँह उठा न पायेगा।' वह डिप्रस (depress) हो गया।

इन दोनों की समस्या है अपनी प्यारी से बात करें कैसे? मेरी समस्या

है-कन्वे (Convey) कैसे करूँ? विच वे (Which way??)

'रे रमेश! तुझ से अच्छा कोई कहाँ मिलेगा उस लड़की को!' राजू बोला।

वह हर चीज को उस पेरामीटर (Parametre) से नापता है जो विद्या, सौंदर्य, होशियारी और ऊँचे पद से संबंधित हो। हाँ, ये सब रमेश में हैं, पर हो सकता है, इन सब के होने के बावजूद सजनी को रमेश पसंद न हो। यह बात उसकी समझ में नहीं आती। समझाने पर भी वह ठीक-ठीक समझ नहीं पाता।

'ब्राण्ड (Brand) को बदलना है', कहा रमेश ने! फ़िल्म शुरू होनेवाली है। हम अंदर नहीं गये। रमेश के मूड (Mood) से लग रहा है कि वह बिना फ़िल्म देखे वापस चले जाने को तैयार है। वसंता को जो सड़क के उस पार जा रही थी, राजू ने देखा। वह बोल उठा-रमेश! उधर देख! तेरी भूतपूर्व प्रेमिका!'

घाँव में नमक छिड़कने वाली बात हुई!!

नाराज होकर राजू की ओर लाल आँखों से देखते हुए उसे ढकेल दिया- 'चल, अंदर चलें!' अंदर गये। पता नहीं, तब तक लड़कियों ने कितनी बार पीछे की हमारी सीटों के तरफ़ मुड़-मुड़ कर देखा है। ठीक हमारे जाते समय सजनी पूरी तरह पीछे मुड़ कर देख रही थी। हमें देखकर तुरंत मुँह फेर लिया।

रमेश को यह छोटी-सी बूस्टर जैसी लगी। उसके दिल में (हल्की सी) mini उमंग उठी।

राजू ने फुसफुसाकर मुझ से कहा-

'यार! सजनी मुड़ कर देख तो रही थी पर इसका मतलब यह नहीं हो सकता कि वह रमेश की ही राह देख रही हो! हो सकता है, वह मेरी और तेरी राह देख रही हो!'

हाँ, ऐसा हो भी सकता है। लेकिन ऐसा कहना नहीं चाहिए। फिर मैं इस तरह की सोच में क्यों पड़ूँ? पीछे से रेखा के झुमके देखता रहूँ, देखता रहूँ, बस, यह मेरे लिए काफी है।

रमेश उन सब बातों को नकारता है जो उसे पसंद नहीं है। कहता है देहाती अनपढ़ लड़कियों झुमके पहनती हैं। जो अंग्रेजी में स्टाइल (Style) मारकर बात नहीं कर सकते उनकी कड़ी सी कड़ी आलोचना करता है। 'स्टिल्स' (Stills)

End of Preview.

Rest of the book can be read @
http://kinige.com/book/Raga+Malika

* * *